नाड़ी भविष्य का अंतरंग

E Book 137



नाड़ी ग्रंथ भविष्य विषय पर सामान्य जानकारी

कई हिंदी भाषी लोगों ने कहा कि बड़ी किताब खरीद कर पढ़ना आसान नहीं है।

अत: ताड़पत्रों पर लिखे नाड़ी ग्रंथों का परिचय दिया गया है।

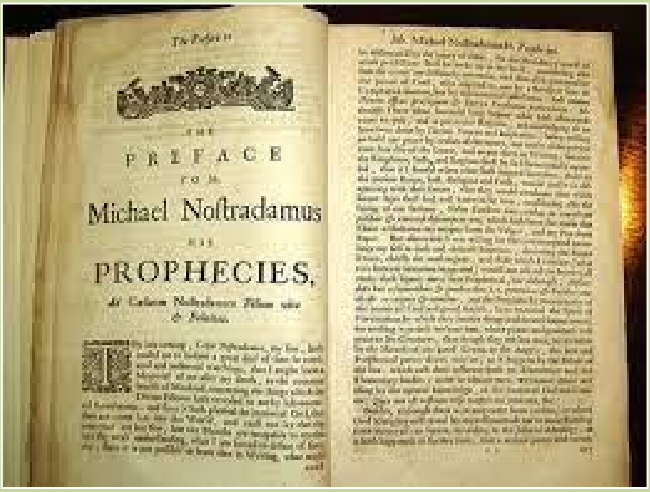
अनुक्रमणिका

नास्त्रेदमस से भी अद्भुत नाड़ी भविष्य ग्रंथ?

E Book 137

नास्त्रेदमस से भी अद्भुत नाड़ी भविष्य ग्रंथ?





पाठकों का यह शीर्षक पढ़कर हैरानी होगी कि अब तक उन्हें नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों इतनी आश्चर्यजनक लगती थी। उससे भी ज्यादा अदभुत भविष्यवाणियां कौन व कैसे कर सकता है? जी हां, नाड़ी ग्रंथ भविष्य नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों से भी अदभुत है। यह एक अटल सत्य है। मैं नाड़ी ग्रंथ भविष्य प्रेमी होने के कारण महर्षियों की अति स्तुति करता हूं यह वस्तुत: पाठक ही तय करेंगे। इस तुलना में नास्त्रेदमस या अन्य ज्योतिष शास्त्रियों को नीचा दिखाने का प्रयास नही है। उनकी भविष्य कथन पद्धति अलग हो सकती है।

११ सितंबर २००१ मानवता के इतिहास का एक अविस्मरणीय दिन था। उस दिन अमेरिका के न्यूयार्क शहर पर आतंकवादियों के हमले में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ११० मंजिला टावर्स ध्वस्त कर तथा वाशिंगटन स्थित पेंटागन की इमारत को जबरदस्त क्षति पहुंचाकर अमेरिका की नाक काट दी। उस दिन के बाद आतंकवाद से धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजकीय निर्णय हथिया लिए जा सकता है। इस विचार धारा की चरम सीमा तब हुई, जब पूरे विश्व में आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध की शुरूआत हो गई । इस घटना के बाद नास्त्रेदमस द्वारा कथित भविष्यवाणियों की, इससे पहले की कड़ियों में एक और कड़ी इतिहास में जुड़ गई। ऐसे विश्वविख्यात भविष्यवेत्ता से भी और प्रतिभावान भविष्यवेत्ता कौन हो सकता है? इसका उत्तर है - हमारे अनेक प्राचीन ऋषि-मुनि! जिन्होंने नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना की है। नाड़ी ग्रंथ भविष्य कैसे अदभुत है? यह जानने से पूर्व नाड़ी भविष्य का तथा उसका संक्षिप्त परिचय पाठको से कराना उचित होगा।

नाड़ी ग्रंथ भविष्य का संक्षिप्त परिचय





हमारे अनेक प्राचीन ऋषिगण जिन्हें भारतीय आदर से महर्षि कहते है - जिनका वर्णन महाभारत, रामायण, भागवतादि ग्रंथो से मिलता है। जैसे वशिष्ठ, अगस्त्य, शुक्र, अत्रि, भृगु, नारद, काक भुशुंडी तथा अन्य अनेक महर्षियों ने हजारों

साल पूर्व अपने आत्मज्ञान के बल पर लाखों-करोडो लोगों का भविष्य अपने प्रज्ञाचक्षु द्वारा देखकर उसे अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग कालखंड में लिख कर तैयार किया। दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में ऐसे भविष्य कथन कई महर्षियों द्वारा लिखे गए हैं। उन भविष्यवाणियों के केंद्र चेन्नई व अन्य शहरों में हमे आज भी देखने को मिलते है। ताड़पत्र की पट्टियों पर कुरेद कर लिखी भविष्यवाणियों को नाड़ी ग्रंथ भविष्य नाम से संबोधित किया जाता है। हर एक व्यक्ति के लिए अलग पट्टी होती है। जिस पर उस व्यक्ति के लिए पट्टी होती है। जिस पर उस व्यक्ति विशेष उसके माता -पिता तथा पति / पत्नी का नाम लिखा पाया जाता है। इतना ही नही उसकी जन्म तिथि, वार, सवंत्सर, राशि,नक्षत्र तथा जन्म काल की ग्रह स्थिति का वर्णन बताकर, बचे जीवन का भविष्य संक्षिप्त में बता दिया जाता है। आने वाले समय में होने वाली मंगलकारी घटनाओं के साथ साथ आपदा व बीमारियां, अपयश आदि बुरी घटनाओं का सामना करने के लिए कुछ दैवी उपाय भी सुझाए जाते हैं। ऐसे अदभुत नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना सामान्य जनों पर परोपकार की भावना से की गई है।

नास्त्रेदमस का संक्षिप्त परिचय



नास्त्रेदमस का संपूर्ण नाम मिशेल या माईकल द नास्त्रेदमस था। फ्रांस स्थित सेंट रेमी गांव में जन्मे नास्त्रेदमस अपने माता पिता की चार संतानों में सबसे बड़े पुत्र थे। वैद्यक शास्त्र का अभ्यास कर उन्होंने फ्रांस में उन दिनों फैले प्लेग से अनेक पीड़ितों की रक्षा की। परंतु अपनी पत्नी व बच्चों को बचा न सके। अत: निराश होकर यूरोप में बसने के बाद उनकी रूचि भविष्य में बढ़ी। कुछ साल अज्ञात वास में बिताने के बाद नास्त्रेदमस को दृष्टांत होने लगा। 'मुझे भविष्य काल की घटनाएं दिखाई देती हैं।' ऐसा वे कहने लगे। एक बार रास्ते से जा रहे एक साधारण देहाती आम आदमी को देखकर उन्होंने झुक कर, 'हिज होलिनस' कहा। उनके द्वारा कहा गया यह कथन १९ साल के बाद १५८५ में वेटिकन के छठे महामहिमपोप (छठे) बनकर सच हुआ। तब तक उनकी ख्याति एक से एक भविष्यवाणियाँ सही होने के कारण इतनी बढ़ी कि समकालीन डॉक्टरों भविष्यवेत्ताओं तथा राजकीय लोगों को ईर्ष्या होने लगी। एक धनी विधवा से पुनर्विवाह से छह संतानों में से बड़े सीझर नामक पुत्र ने नास्त्रेदमस के लिखे 'सेंचुरीज' ग्रंथ को प्रकाशित किया । लोगों की

दुष्टता के कारण सेंचुरीज ग्रंथ में अपनी भविष्यवाणियों को उन्हें ऐसे गूढ़ अंदाज से कहना पड़ा जिन्हें सामान्यत: पढ़ने से कुछ अर्थ ना निकले। व्यक्तियों के नाम घटनाओं के सही वर्ष, देश तथा शहरों के उल्लेख नास्त्रेदमस को कविताओं, प्रतीकों में करने पड़े। सेंचुरीज ग्रंथ में दस अध्याय हैं। हर एक अध्याय में भविष्यवाणियों के एक सौ श्लोक हैं। ग्रंथ में सन ३९९७ तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है।

उनमें से सैकडों कथनों के सही साबित हो जाने का दावा किया जाता है। सेंचुरीज ग्रंथ का अनुवाद लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध है। नास्त्रेदमस के कथनों को पुस्तकों इंटरनेट द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने की होड़ लगी रहती है। नास्त्रेदमस को न मानने वाले बहुत लोग है, ऐसे अविश्वासी लोगों का मानना है कि हर श्लोक का मनमाने ढंग से अर्थ कर शब्दों को तोड़-मरोड़ कर पाठकों की रूचि के अनुसार अर्थ में परिवर्तन किया जाता है।

एक ही श्लोक से अनेक अर्थ निकाले जाते हैं। नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों पर ऐसे भी आरोप लगने लगे कि किसी एक घटना के होने के बाद उस घटना से मिलते जुलते श्लोक का वर्णन फिट बैठाया जाने लगा है। फिर भी अनेक लोग इन भविष्यवाणियों को रोमांचक अनुभव मानकर मनोरंजन के रूप में सही मानते हैं। जिसका गुणगान किया जाता है।

नाड़ी ग्रंथ भविष्य और नास्त्रेदमस के ग्रंथ भविष्य की तुलना

१. ४०० साल से ज्यादा पुरानी नहीं

नास्त्रेदमस की 'सेंचुरीज' पुस्तक सोलहवी शताब्दी में लिखी गई । इससे पहले विदेशों में ऐसी लिखित भविष्यवाणियों के प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसके विपरीत नाड़ी ग्रंथ भविष्य, कम से कम २ हजार साल से भी पूर्व प्राचीन काल से प्रचलित है। इस तरह नाड़ी भविष्य कर्ता महर्षि जैसे अगस्त्य, अत्रि, वशिष्ठ, काकभुशुंडी, मार्कन्डेय आदि के भविष्य कथन नास्त्रेदमस के कथन से बहुत पुराने होने के कारण पिता या प्रपितामाह या उनसे भी वरिष्ठ माने जा सकते है।

२. एक मात्र विदेशी

नास्त्रेदमस की सेंचुरीज पुस्तक सोलहवी शताब्दी में लिखी गई । इससे पहले विदेशों में ऐसी लिखित भविष्यवाणियों के प्रमाण उपलब्ध नही हैं। इसके विपरीत नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना का कार्य मात्र एक एक व्यक्ति का न होकर अनेक महर्षियों का योगदान है। कुछ महर्षियों वर्तमान में उपस्थित होकर जातकों का मार्गदर्शन कराते है। महर्षियों के उन कथनों को जीव नाड़ी कहा जाता है।

३. प्राण भय

नास्त्रेदमस को प्राण के भय के कारण लेखन छुप कर करना पड़ा । घटना, व्यक्तियों के नाम आदि का वर्णन आदि उसे कूट शब्दों में करना पड़ा। नाड़ी ग्रंथ भविष्य कर्ता महर्षियों को भविष्य कथन के कारण अपने जीवन की रक्षा करने की चिंता कभी नही हुई। प्राण भय की चिंता को दूर, उलटा उन्हे राजा-महाराजाओं द्वारा सुरक्षा दी जाती थी। यह काम करके उन्हें आत्मिक आनंद ही प्राप्त होता था।

४. सामान्य व्यक्तित्व

नास्त्रेदमस को भविष्य कथन के दृष्टांत अचानक होने के कारण वह एक चमत्कार की घटना मानी गई क्योंकि लोगों ने उन्हें तप या साधना करते नही देखा था। इसलिए उन्हे अपने समय में एक बिगड़े हुए मानसिक संतुलन का व्यक्ति, औलिया माना जाता था। बाद में जैसे-जैसे उनके कथन का घटनाओं से मेल खाने लगे, तब उन्हे महान भविष्यवेत्ता की मान्यता प्राप्त हुई।

इसके विपरीत नाड़ी ग्रंथ भविष्य कर्ता महर्षियों को हमेशा अति मानव की योग्यता के रूप में आदर सम्मान से देखा जाता था। अनेक प्राचीन ग्रंथों में कड़ी तपस्या करने तथा आत्मज्ञान के बल पर विश्व चैतन्य शक्ति द्वारा त्रिकाल का ज्ञान प्राप्त करने वालों की श्रेणी में उन्हे गिना जाता था।

५. उलझन भरा कथन

नास्त्रेदमस के भविष्य कथन अर्थ के गुत्थम-गुत्थे में अनेक अर्थ या इंटरप्रिटेशन किए जाते हैं। अलग-अलग भाषाओं में विभिन्न देशों में विपरीत अर्थ निकालने की होड़ लगी होती है। इसका एक उत्तम उदाहरण था - दूसरे महायुद्ध में हिटलर द्वारा नास्त्रेदमस के कथनो के आधार बनाकर दोस्त राष्ट्रों की जनता पर, 'आखिर मेरी ही जीत होगी।' ऐसे लिखे परचे विमान द्वारा धडल्ले से फेककर वहां की जनता का मानसिक संतुलन बिगाड़ने की चाल चली गई थी। आश्चर्य की बात तब हुई, जब महायुद्ध के बाद उन्ही श्लोकों को आधार बनाकर दोस्त राष्ट्र विजयी होने की बात पर अनेक पुस्तकों की रचना की गई!

नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना ऐसी घटनाओं के कठिन तथा अनेक अर्थ निकाले जाने की संभावना को टालने के लिए हर एक व्यक्ति के संदर्भ में ताड़पत्र पर

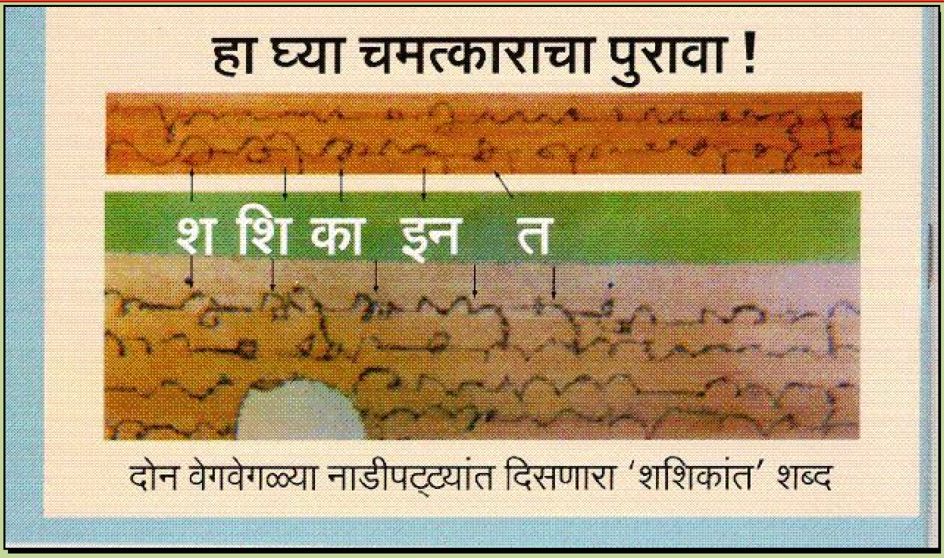
भविष्य की गई है। तथा देश या राज्य के बारे में भविष्य कथन न करके उनमें स्पर्धा या विनाश को टाला गया है।

६. व्यक्ति के नाम के प्रमाण नहीं

नास्त्रेदमस के भविष्यकथन में व्यक्ति के जन्म व्यवसाय, जन्म तिथि, कुंडली आदि का वर्णन नही मिलता । जो वर्णन मिलता है वह इतना उलझन भरा होता है कि उससे व्यक्ति का सही-सही वर्णन नही मिलता।

इसके विपरीत नाड़ी ग्रंथ भविष्य की अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि जिसके लिए भविष्य लिखा गया है। उस व्यक्ति की सभी जानकारियां नाड़ी पट्टियों में लिखी पाई जाती है। जैसे कि प्रस्तुत लेखक के बारे में कहा गया था।

इसका जातक नाम 'शशिकांत' है माता का नाम 'मंगला' तथा पिता का नाम 'जनार्दन' तथा उसकी प्रथम स्वर्गीय पत्नी का नाम 'छाया' व द्वितीय जीवित पत्नी का नाम 'अलका' है। जो ४५ साल की आयु में यह भविष्य देखने के लिए आया है। उसकी दो विवाहिता छोटी बहनें है । मां जीवित तथा पिता का स्वर्ग वास हो चुका है। उसका एक लड़का, एक लड़की स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर रहे है। जातक देश के रक्षा विभाग में जो आकाश में तीव्र गति से जाकर शत्रु पर आग बरसाने वाले वाहनों से संबंधित अर्थात वायुसेना (एयर फोर्स) में वरिष्ठ अधिकारी है।



दोन वेगवेगळ्या नाडीपट्ट्यांत दिसणारा 'शशिकांत' शब्द

दो अलग पट्टीयों में "शशिकांत" नाम ऐसे दिखाई देता है।

७. एक मात्र पुस्तक की रचना

नास्त्रेदमस इतने बड़े लंबे काल के लिए १००० श्लोकों के एकमात्र ग्रंथ सेंचुरीज की रचना की गई। परंतु किसी एक व्यक्ति विशेष के संपूर्ण जीवन काल का भविष्य कथन नही किया।

नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना अब तक ज्ञात कम से कम ७२ महर्षियों द्वारा की गई। नाड़ी ग्रंथ रचना आने वाले कितने समय के लिए कितने व्यक्ति के लिए ताड़पत्रों पर की गई है। इसका सही प्रमाण अभी तक प्राप्त नही हुआ है । ताड़पत्र लाखों की संख्या में अनेक नाडी केंद्रों में उपलब्ध है। भविष्य काल में जन्म लेने वाले अनंत जीवों का कल्याण हेतु ताड़ पट्टियों की रचना की गई है।

८. घटना के बाद संदर्भ

नास्त्रेदमस के भविष्य में घटना के बाद किसी श्लोक का संदर्भ देकर उसकी महानता का गुणगान किया जाता है।

नाड़ी ग्रंथ भविष्य में व्यक्ति के जन्म लेने से मृत्यु तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का ब्योरा २०-२२ श्लोकों में दिया जाता है। साथ में अलग १२ कांडों में जीवन के अन्य अंगों के भविष्य कथन किए जाते है।

९. परोपकार की भावना का अभाव

नास्त्रेदमस का कथन एक टाइम पास बनकर रह जाता है। इसमें परोपकार की भावना दिखाई नहीं देती। नाड़ी ग्रंथ भविष्य की रचना पारिवारिक उलझनों में फंसे सामान्य लोगों के दु:ख -दर्द कम करने तथा निराश से भरी मन: स्थिति से उबारने के लिए परोपकार की भावना से लिखे गए हैं।

१०. उपायों के सुझाव नहीं

नास्त्रेदमस द्वारा जीवन में आने वाली बुरी घटनाओं के अनिष्ट परिणामों से बचने के उपाय नहीं सुझाए गए हैं। नाड़ीकर्ता महर्षि, भविष्य में आने वाले बुरे समय से लड़ने के लिए तथा समस्याओं के समाधान के लिए कुछ दैवीय उपाय सुझाते हैं। उन्होंने ऐसे उपाय किए, जिससे लोगों को स्पष्ट लाभ का अनुभव मिला।

११. नकली होने का भय

नास्त्रेदमस के कथन मे घटना हो जाने के बाद उसके अनुसार नकली श्लोक डालकर या शब्दों की हेराफेरी कराकर कथन शत -प्रतिशत सही बनाने की प्रवृति पाई जाती है। नाड़ी ग्रंथ भविष्य की ताड़पट्टी में व्यक्ति का नाम व अन्य जानकारी जब तक शत प्रतिशत सही नहीं मिलती या जब तक व्यक्ति अपने आप नही कहता कि उक्त पट्टी उसकी है। तब तक खोज जारी रहती है। इसलिए नाड़ी पट्टी की नकली होने की संभावना नही रह जाती।

१२. प्रमाण हाथ में

नाड़ी ग्रंथ भविष्य देखने के बाद एक नोटबुक जिसमें ताड़ पट्टी पर कूटलिपि में लिखे श्लोक सामान्य तमिल भाषा में लिखे होते है तथा भविष्य कथन के अनुवाद की कैसेट या आजकल सीडी भी साथ दी जाती है। नास्त्रेदमस के भविष्य में ऐसी कोई बात है ही नहीं।

अब पाठकों को इसका थोड़ा परिचय हो गया होगा कि मैं नाड़ी भविष्य को नास्त्रेदमस के भविष्य कथन से ही अदभुत क्यों मानता हूं। नास्त्रेदमस का यूरोपीय क्रिश्चियन होना, विदेशी प्रचार माध्यमों द्वारा धड़ल्ले से प्रचारित होना आदि बातों से नास्त्रेदमस का नाम तथा भविष्य अति लोकप्रिय हो गया। परंतु मारे देश में उपलब्ध नाड़ी ग्रंथों में वर्णित भविष्य का पता भी हमें न हो ये बात हमें शोभा नहीं देती। इसके विपरीत नाड़ी ग्रंथों का प्रचार होना दूर, थोड़ी-बहुत जानकारी प्रसार माध्यमों से मिल भी जाए तो उस पर शोधकार्य या चर्चा करने से पहले नाड़ी भविष्य का अनुभव किए बिना, 'नाड़ी ग्रंथ भविष्य झूठे हैं - पाखंड है', 'अनुभव मत कर लेना, नहीं तो भविष्य के भरोसे निष्क्रिय बनगे,' आदि कुप्रचार ज्यादा जोर-शोर से किया जाता है। इसका कारण यह है कि ऐसा करने से लोगों को अंधश्रद्धा दूर करने के काम में जुटी तर्कवादी 'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' जैसे संगठनों को अपनी साख बढ़ने का अवसर दिखाई देता है। परन्तु इस प्रकार के प्रचार से भयभीत न होकर कम से कम नाड़ी ग्रंथ भविष्य क्या है। इसका अनुभव प्राप्त करना निहायत जरूरी है।

....

नाड़ी ग्रंथ का प्रथमानुभव श्री अगस्त्य नाड़ी

E Book 137



नाड़ी ग्रंथ का प्रथमानुभव श्री अगस्त्य नाड़ी

पाठकों, अपने ‘नास्त्रेमदस से भी नाड़ी भविष्य कैसे अदभुत है’, इसकी थोड़ी जानकारी ली। अब आप मेरा प्रथम अनुभव पढ़िए।

दुनिया में कभी-कभी चमत्कार होते है, ऐसा माना जाता है। लेकिन गारंटी के साथ चमत्कार की घटनाएं हो रही हो ऐसा शायद ही देखने को मिलता है। वायुसेना में रहते हुए मैं मानता था कि दुनिया में चमत्कार जैसी कोई चीज नही है लेकिन नाड़ी ग्रंथों का अनुभव होने के बाद मेरे मत में परिवर्तन आ गया है।

१९९४ फरवरी की बात है तब में चेन्नई के पास तांबरम वायुसेना स्टेशन में कार्यरत था। बातों - बातों में पता चला कि वहां से ४-५ किमी की दूरी पर अगस्त्य नाड़ी नीलयम नाम से एक केंद्र है एक दिन सुबह उस नाड़ीकेंद्र पर जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही मेरे साथ के दाहिने अंगूठे के निशान लिए गए। कुछ समय बाद नाड़ी शास्त्री एक हाथ में ताड़ -पट्टियों का पैकेट लेकर उपस्थित हुए । मेरे जैसे तमिल भाषा न जानने वाले के लिए हिन्दी व अंग्रेजी अनुवादक की व्यवस्था की गई। एक छोटे कमरे में टेबल-कुर्सियों का प्रबंध था। टेबल पर लाल रंगका टेप रिकार्डर और टेलीफोन की व्यवस्था थी। दीवारों पर देवी देवताओं के अतिरिक्त अगस्त्य व अन्य महर्षियों के फोटो टंगे हुए थे। ५०-६० ताड़ -पट्टियों की गड्डी को लकड़ी की दो पतली पट्टियों में एक धागे से पिरोकर कसकर बांधे हुए पैकेट को खोलकर उसमें से एक -एक पट्टी हाथ में लेकर नाड़ी शास्त्री पट्टी तमिल में पढ़ने लगे। मुझे उसमें से कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। तब उन्होंने अनुवादक की तरफ देखकर पट्टी में लिखे कूट तमिल को सामान्य तमिल में रूपांतरित करने को कहा। अनुवादक ने मुझे अंग्रेजी अनुवाद करके कहा कि अगस्त्य ऋषि शिव- पार्वती को नमन कर जातक का भविष्य कथन करने जा रहे हैं। उसके बाद मेरे दाहिने हाथ के अंगूठे की निशानी का वर्णन किया गया। उसी पट्टी का वाचन जारी रखते हुए शास्त्री जी ने अनुवादक की सहायता से पूछा, जिस व्यक्ति की वह पट्टी है उसके दो भाई व एक बहन है क्या यह आप पर लागू होता है? मुझे मात्र हां या ना में जबाब देना था। मैंने नहीं कहा। जो अनुवादक ने नाड़ी शास्त्री को बताया और उन्होने वही पट्टी नीचे रखी। अगली पट्टी हाथ में लेकर उसे पढ़कर अनुवादक के माध्यम से पूछा, जिसकी यह पट्टी है, उसकी शादी हुई है। मेरे हां कहने पर उन्होने उस समय का पट्टी पढ़ना जारी रखते हुए पूछा,क्या आपके दो पुत्र व एक पुत्री है? मेरे ना कहने पर उस पट्टी

को रद्द करते हुए अगली पट्टियों को देखने का सिलसिला अनुवादक की मदद से अगले २-३ घंटे जारी रखा।

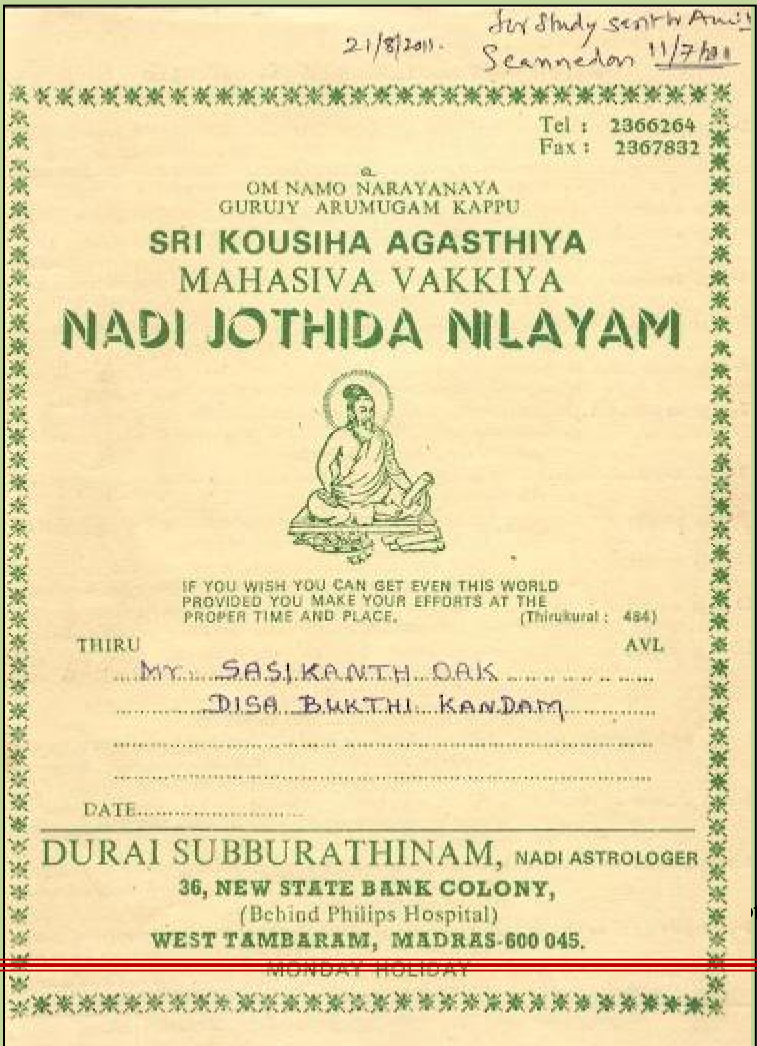
ताड़पत्र की पट्टियां १२ से १८ इंच लंबी और डेढ़ या दो इंच चौड़ी व लचीली होती है ताड़ के पंखों में काम आने वाले पत्तो पर रासायनिक प्रक्रिया कर हाथ की मुट्ठी में लंबी कीलनुमा तीक्ष्ण धार वाली कलम से हाथ को उठाते हुए लिपिबद्ध किया हुआ यह भविष्य बड़े ही सुंदर और अदभुत ढंग से लिखा गया है।

ऐसी अद्भुत सी पट्टियों के बारे में बात करने पर एक पट्टी में लिखा हुआ पाया - इस जातक का नाम - शशिकांत, माता की नाम -मंगला, पिता का नाम - जनार्दन पाया वर्तमान पत्नी का नाम -अलका व प्रथम स्वर्गीय पत्नी का नाम छाया था। दो छोटी बहने विवाहित कोई भाई नही है एक पुत्र स्कूली शिक्षा ग्रहण कर रहा है। उंचे ओहदे पर आप सरकारी अधिकारी है। जो देश रक्षा विभाग से संबंधित वायुसेना में (वान विरोधी मार्गम- नाड़ी पट्टी के लिखित तमिल शब्द) कार्यरत है। विरोधी वरूषम आड़ी मासम १६ (तमिल) तिथि सित्तरै (चित्रा) नक्षत्रम् रवि वारम् ऐसे मेरे जन्मदिन का वर्णन पाया। जो मेरी जन्म तारीख ३१ जुलाई १९४९ से शत -प्रतिशत मिलता था।

अनुभव मेरे लिए अविश्वसनीय था। मेरे व अन्य संबंधियों के नाम नाड़ी पट्टी में कहा - कहो लिखे हैं जानने के लिए उस पट्टी के फोटो मुझे दिए गए। जिसकी पहली पंक्ति में दो बिंदुओ के बीच स सि का इन त तमिल अक्षर लिखे है तमिल में अनुस्वार की जगह इन अक्षर का प्रयोग किया जाता है इसकी सत्यता आप तमिल जानकारों से निश्चित कर सकते है। अगस्त्य, वशिष्ठ, शुक्र, काक भुशुंड और ऐसे अनेक महर्षियों ने प्राचीन तमिल भाषा की कूट लिपि में हजारों वर्ष पूर्व की कष्टमय परिस्थितियों में ताड़पत्र पर कीलनुमा लंबे कलम को मुट्ठी में पकड़ कर लाखों लोगों

के लिए भविष्य कैसे लिखा होगा। यह सोचकर मैं चक्कर में पड़ गया। एक कांड का आरंभ कुछ ऐसी घटनाओं के साथ हुआ, जिसे सुनकर मैं दंग रह गया। कहा था हाल ही में आपका परिवार बुरी वाहन दुर्घटना से बाल- बाल बचा जो बिलकुल सही था। दो महीने पहले मेरी कार सामने से आने वाले वाहन से टकरा गई थी। सौभाग्य वश परिवार के सभी सदस्य बाल-बाल बच गए और कार की जबरदस्त मरम्मत करानी पड़ी थी।

मेरी पदोन्नति में हुई अकारण देरी, बच्चों की शिक्षा में उत्पन्न अवरोध पत्नी का त्वचा रोग (उन्हें उन दिनों एलर्जी के कारण) खुजली की पीड़ा थी। आदि के उल्लेख एकदम सही थे, कहा गया था कि हाल में आप कोर्ट केस में व्यस्त थे पहले यकीन नही हुआ, कारण एयर फोर्स की नौकरी में कोर्ट केस का स्थान? पर दिमाग पर ज़ोर देने के बाद आया कि कुछ महीने पहले मैंने एक कोर्ट मार्शल में महत्वपूर्ण गवाही दी थी। एक-एक बात सुनकर भौंचक्का रह गया। ऐसी बड़ी बड़ी सत्य घटनाओं के उल्लेख से मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरा भूतकाल संपूर्ण रूप से सत्य है।



इस तरह लाखों पट्टियों में से जब मेरी पट्टी मिल गई तब उस पर लिखे भविष्य के श्लोकों को एक छोटी नोटबुक में उतारा गया। श्लोकों में वर्णित ग्रह स्थिति से कुंडली बनाई गई। जो मेरे पास कुंडली से मेल खा रही थी। उस नोट बुक में लिखे एक - एक कूट तमिल पंक्ति का अर्थ नाड़ी

शास्त्री अनुवादक को बताते। जिसे समझकर अनुवादक अंग्रेजी में रूपांतरित कर टेबल पर रखे टेपरिकार्डर की मदद से कैसेट में भरते चले गये। ३०मिनट की एक साइड पूरी भर जाने के बाद संपूर्ण प्रथम कांड का भविष्य कैसेट व नोटबुक नम्रतापूर्वक झुक कर मेरे हाथों में सौंपी गई। इस सब भविष्य कथन के लिए उन दिनों १०० रू. और टेप के लिए अलग से २५ रू. लिए गए।

इस प्रथम कांड में महर्षि अगस्त्य ने जातक को यानी मुझसे अन्य कांडों में वर्णित सूक्ष्म भविष्य जानने के स्पष्ट आदेश दिया था। इसलिए मैंने अन्य सभी कांडों का भविष्य जाना। उन कांडों के वाचन के समय पता चला कि साधारणतया १५ से २० श्लोकों की ६०-८० पंक्तियों में जातक का पूरा भविष्य कथन होता है। मेरे संदर्भ में हर एक कांड के शुरू में कहा जाता था कि धनुष लग्न कन्या राशि वाले जातक का नाम शशिकांत, माता- मंगला, पिता - जनार्दन, पत्नी- अलका, अमुक नंबर का कांड जातक अपनी ४५ साल की आयु में देख रहा है। ऐसे वर्णन सुनने के बाद गलत पट्टी होने की संभावना खत्म हो जाती थी। प्रथम कांड में आने वाले भविष्य के वर्णन के पहले पूर्व जन्म व अभी के जन्म में किए पापों के कारण उत्पन्न कष्ट की दशा तथा आने वाली आपत्तियों से आगाह किया जाता है। उस पर उपाय भी सुझाये जाते हैं जिसका सूक्ष्म वर्णन शांति (१३) दीक्षा (१४) नंबर के कांडों में किया जाता है। बचे हुए आयुष्य का भविष्य कभी १ साल तो कभी २-४ सालों का इकट्ठा बताया जाता है।

ये ग्रंथ मात्र भारतीयों के लिए नही बल्कि सभी विदेशों के और सभी धर्मों के मनुष्य मात्र के लिए उपलब्ध है। प्राचीन महर्षियों को इसकी इतनी अचूक जानकारी, जिनका जन्म भी अभी नही हुआ हो कैसे प्राप्त होगी? अगूंठे की निशानियों के एक-दूसरे से न मिलने की विशेषता का उपयोग कर उसे इंडेक्स के जैसा प्रयोग करना आदि बातें सोचकर मन हैरान होता है। नाड़ी ग्रंथ की अमूल्य

संपदा पर हर भारतवासियों को गर्व होना चाहिए, लेकिन इस देश में ऐसे भी कुछ लोग हैं जो नाड़ी ग्रंथों को झूठा साबित करने का प्रयास करने में धन्य मानते हैं। वैज्ञानिक ढ़ंग से नाड़ी पट्टियों की परीक्षा जरूर होनी चाहिए परंतु कसौटी के लिए कुछ अटपटी शर्तें डालकर समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनी रहे, इस कारण कुछ संस्थाएं नाड़ी पट्टियों की कसौटी का नाटक कर नाड़ी ग्रंथों की पोल खुलने के दावे बीच-बीच में करती है। ऐसे प्रचार से पाठक सावधान रहे। आजकल नाड़ी भविष्य केंद्रों की स्थापना नई दिल्ली, मुम्बई, बंगलोर, पुणे, नागपुर जैसे बड़े शहरों में भी हो गई है। इस विषय पर हिंदी, अंग्रेजी, मराठी व तमिल भाषाओं में लिखी मेरी पुस्तकें उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए मुझसे संपर्क किया जा सकता है। क्या हम भारतवासी ऐसी तमिल भाषा साहित्य संपदा का अपने संदर्भ में अवलोकन कर भविष्य जानना नहीं चाहेंगे?

.....

क्या है ये नाड़ी ग्रंथ?

प्रकरण 3   E Book 137

क्या है ये नाड़ी ग्रंथ?



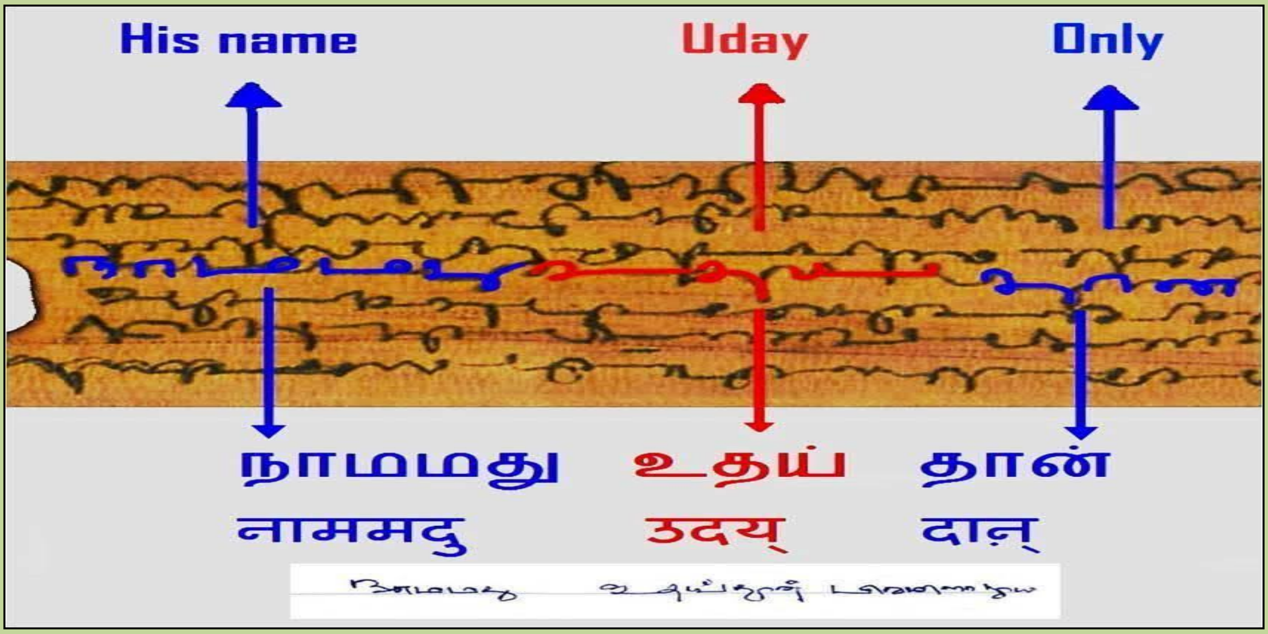
नाडी ग्रंथ पट्टीयों के पैकेट

यदि कोई आपसे कहे कि मात्र अंगूठे की निशान की सहायता से ताड़पत्र पर कुरेद कर लिखी गई तमिल भाषा की पांडुलिपियों में आपको अपना अपने माता-पिता, पति-पत्नी का नाम, आपकी जन्म तिथि, नौकरी-पेशा, भाई-बहनों की संख्या आदि देखने को मिले तथा आगे के जीवन के भविष्य का पता चले तो भविष्य को आप क्या कहेंगे? किसी जादूगर द्वारा की गई हाथ की सफाई या तर्क से परे अंत: शक्ति का सीधा-सादा प्रर्दशन? नहीं यह कोई जादूगर के पिटारे का अनोखा जादू नही या अंधश्रद्धालुओं को फंसाने की कोई चाल भी नहीं। तो फिर यह है क्या?

बुद्धि को स्तंभित करने वाला और सभी तथ्यों को झूठा साबित करने वाला यह भविष्य कथन नाड़ी ग्रंथों पर आधारित है, अनुभव किए बिना विश्वास करना

मुश्किल है, लेकिन यह वास्तविकता है। प्राचीन काल में विविध महर्षियों ने अपने ज्ञान चक्षुओं द्वारा आने वाले समय में जन्म लेने वाले अनगिनत लोगों की जीवनी देखी और उन्हें अनेक ऋषियों द्वारा व्यवस्थित ढ़ंग से आलेखित किया। ऐसे भविष्य को हजारों वर्ष बाद सही व्यक्ति के हाथ में पहुंचाने का महान काम देखकर प्रतीत होता है कि मानव द्वारा निर्मित आधुनिक विज्ञान की कक्षाएं आज भी कितनी सीमित हैं। तमिलनाडु राज्य में चेन्नई और उसके दक्षिण में वैदीश्वरन कोई व अन्य शहरों में प्राचीन महर्षियों द्वारा निर्मित नाड़ी ग्रंथों की ताड़-पट्टियों अनेक केंद्रों में देखने में देखने को मिलती है। ऐसे ही एक नाड़ी केंद्र में मुझे मेरी ताड़पट्टी देखने को अवसर मिला।

यह ताड़पट्टी पुणे स्थित श्री उदय मेहता की है । व्यक्ती का नाम कैसे लिखा होता है इसका एक उदाहरण प्रस्तूत है। ऐसे ही हर एक की पट्टी में नाम तथा जन्म दिनांक, कुंडली लिख कर आती है।



उस अनुभव को आपके सामने प्रस्तुत कर, इस ज्योतिष शास्त्र के संबंध से अधिक जानकारी दिलाने तथा ज्यादा सा ज्यादा लोगों का भविष्य जानने के लिए

उत्सुक कराना, इस लेख का उद्देश्य है। नाड़ी महर्षियों का संकेत भी है कि मेरे द्वारा इस विषय पर लेख या पुस्तक लिखे जाएं

नाड़ी ग्रंथ की रचना

E Book 137

नाड़ी ग्रंथ की रचना

भारत केवल एक राष्ट्र, देश या भू-भाग न होकर और भी बहुत कुछ अदृश्य, प्रतीकात्मक, काव्यात्मक भी है क्योंकि संपूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसने अपनी संपूर्ण प्रतिभा, सत्य को जानने के प्रयत्न में एकत्रित और समर्पित की है। करीब दस हजार वर्षों से लाखों लोग इस प्रयास में संलग्न हैं। इसी प्रयत्न में उन्होंने वैज्ञानिक समृद्धि की बलि देकर दरिद्रता और रूग्णता को अंगीकार किया और सत्यशोधन के कार्य से कभी मुंह नहीं मोड़ा। इन सभी महापुरूषों, संत-महात्माओं एवं ऋषि-मुनियों की दिव्य आशीर्वादात्मक तरंगें आज भी यहां के वातावरण में विद्यमान हैं। ये सब संत-महात्मा, ऋषि-मुनि केवल महान कवि, चित्रकार, प्रतिभावान ज्ञानी ही नहीं थे, अपितु दिव्यता के माध्यम रहे। उन्होंने इस दिव्यता के द्वारा विविध प्रकार से खोलकर समस्त मानवता पर विशेष उपकार किए हैं, परंतु इस दिव्य ज्ञान को जानने के लिए हमें एक विशिष्ठ भावदशा को प्राप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। हमें उस ज्ञान को प्राप्त करने की तीव्र जिज्ञासा होनी चाहिए।

आम आदमी में भविष्य जानने की चाहत स्वाभाविक होती है। विवाह तय करते समय जन्म कुंडली की मांग विशेष तौर पर होती है। लंबी बीमारियों, कोर्ट-कचहरी में सालों-साल लटके हुए मुकदमे, संतति का न होना, नौकरी-धन्धे की परेशानी आदि ऐसे कई कारणों से आदमी को जब ऐसा लगने लगता है कि अपनी तरफ से कोशिशों में कमी न होते हुए भी बार बार निराशा हाथ लगती है, तो वह किसी न किसी भविष्य बताने वाले के पास पहुंच ही जाता है। कोई जन्मपत्री लेकर ज्योतिषी को दिखाते हैं, तो कोई हथेली आगे कर उस पर बनी रेखाओं के विशेषज्ञों से आने वाले समय का निदान करवाते हैं। कुछ रमल विद्या प्रवीण लोगों से फासों

के आंकड़ो से अपने सवालों का जवाब ढुंढते हैं। कुछ सडक के किनारे पिंजड़ों में बंद तोतों को लेकर बैठे हुए लोगों के पास जाकर तोते द्वारा निकाले गए पर्चे पर लिखे भविष्य से मार्गदर्शन पाते हैं। कुछ लोग टेरोकार्ड से समाधान पाते हैं।

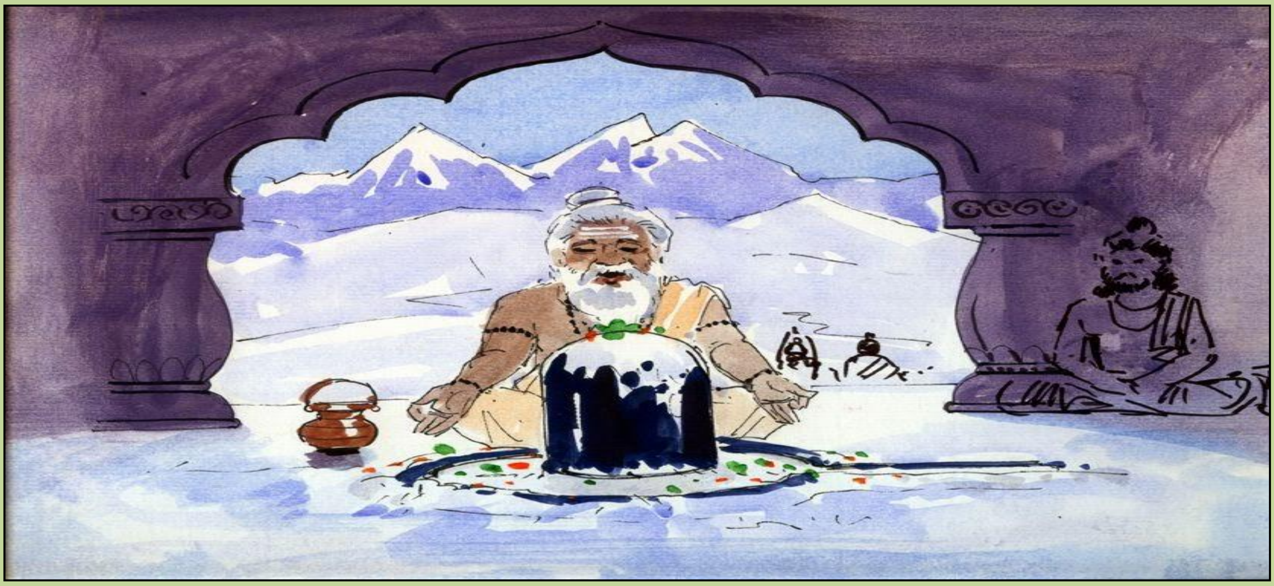
आजकल बाजार में मिलने वाली दिन, सप्ताह, महीने, साल आदि के भविष्य से भरी पड़ी पुस्तकों से लोग अपना काम चला लेते हैं। दक्षिण में राहु काल में काम की शुरूआत टाली जाती है। कुछ लोग अपनी मान्यतानुसार बाइबिल, कुरान, गुरू ग्रंथ साहेब, जेंद अवेस्ता ,तुलसी रामायण, भागवत जैसे धार्मिक ग्रंथों का कोई भी एक पन्ना अनायास खोलकर उस पन्ने पर लिखी बातों से अपनी समस्या योग्य समाधान पाते हैं।

कुछ लोगों को ये सब बातें अटपटी-सी लगती हैं। वे इन बातों को डरपोक लोगों के मन की कमजोरी मानकर भयभीत करते हैं। कुछ व्यक्तियों को अपने बाहुबल पर विश्वास होता है, तो कुछ लोग मानते हैं कि मानव मात्र द्वारा कि ए गए प्रयास कोई भी फल पाने के लिए काफी नहीं होते। उसके लिए उन्हें नसीब पर जोर देने की जरूरत पड़ती है। वे ऐसा मानते हैं कि इस विशाल विश्व रचना में मानव का स्थान अत्यंत छोटा, तुच्छ है। उसकी शक्ति, बुद्धि एवं तर्क अत्यंत सीमित है। जब तक विश्व के अन्य घटक मानव कार्य के पूरक नहीं होते, तब तक मानव द्वारा किया कोई भी कार्य, कष्ट और परिश्रम एक भारवाहक के समान निष्फल रहेगा। वे सभी दृश्य या अदृश्य घटक कार्य विरोधी न होकर कार्य पूरक हों, इसलिए मानव ने प्राचीन काल से प्रकृति को अपने समांतर मानवीय शरीर के रूप में मानना शुरू किया तथा उस प्राकृतिक शक्ति की आराधना शुरू की। उस शक्ति को आराधना अनुसार मानव ने प्रतीकों में ढाला। किसी ने क्रॉस में, तो किसी ने सुंदर मूर्तियों में, तो किसी ने पुस्तक के रूप में ढ़ालकर पूजा-अर्चना शुरू कर भावुकता से समीपता प्रस्थापित करने का प्रयास किया।

प्राचीन काल से कुछ मानव विश्व चैतन्य की खोज में लगे हुए थे। अथक प्रयासों के बाद उन्हें कुछ उपलब्धियां भी प्राप्त हुई। मानव के पंच इंद्रियों के ज्ञान से परे जानने योग्य कुछ विशेष ज्ञान है, ऐसी अनुभूति उन्हें हुई, परंतु उस खोज के लिए साधना, तपस्या का विशिष्ठ जीवन जीवन-क्र म बिताना आवश्यक था।

ज्ञान की खोज में भारत का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस भूमि की एक वैभवशाली परंपरा है। इन परंपराओं को जागृत रखने के लिए कुछ अदृश्य शक्तियां भारत में सदा कार्यरत रही हैं।

मनुष्य की असंख्य जिज्ञासाओं में से अपना भविष्य जानने की जिज्ञासा अत्यंत तीव्र है। इसी जिज्ञासा को पूरा करने हेतु हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक मनुष्य का भविष्य विविध प्रकार से आलेखित किया है। उसे ही हम नाड़ी शास्त्र की संज्ञा दे सकते हैं।



ये ऋषि-मुनि योगशास्त्र के ज्ञाता थे, यह अलग से बताने की आवश्यकता नहीं है। योग शास्त्रों में दशाओं का वर्णन किया गया है। उसे समझ लेने के पश्चात् ही योगियों को त्रिकाल ज्ञान कैसे-कैसे प्राप्त होता होगा, इस संबध में हमें जानकारी हो सकती है। इसी आत्मज्ञान के भंडार का एक छोटा-सा विभाग है-जातक (भविष्य

जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति) का भविष्य अवलोकन कर उसे विस्तार पूर्वक और सूत्रबद्धता से लिपिबद्ध करना।

अतींद्रिय ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? अतींद्रिय ज्ञान का अन्य किसी प्रकार से विचार होना क्या संभव है? यह समझने के लिए मनुष्य के शरीर के विविध सूक्ष्म रचना को विस्तार पूर्वक समझ लेना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को हम सात अलग-अलग शरीरों में विभाजित कर सकते हैं, जैसे-

प्रथम- स्थूल शरीर (फिजिकल बॉडी)

दूसरा - सूक्ष्म शरीर-आकाश शरीर (इथरिक बॉडी)

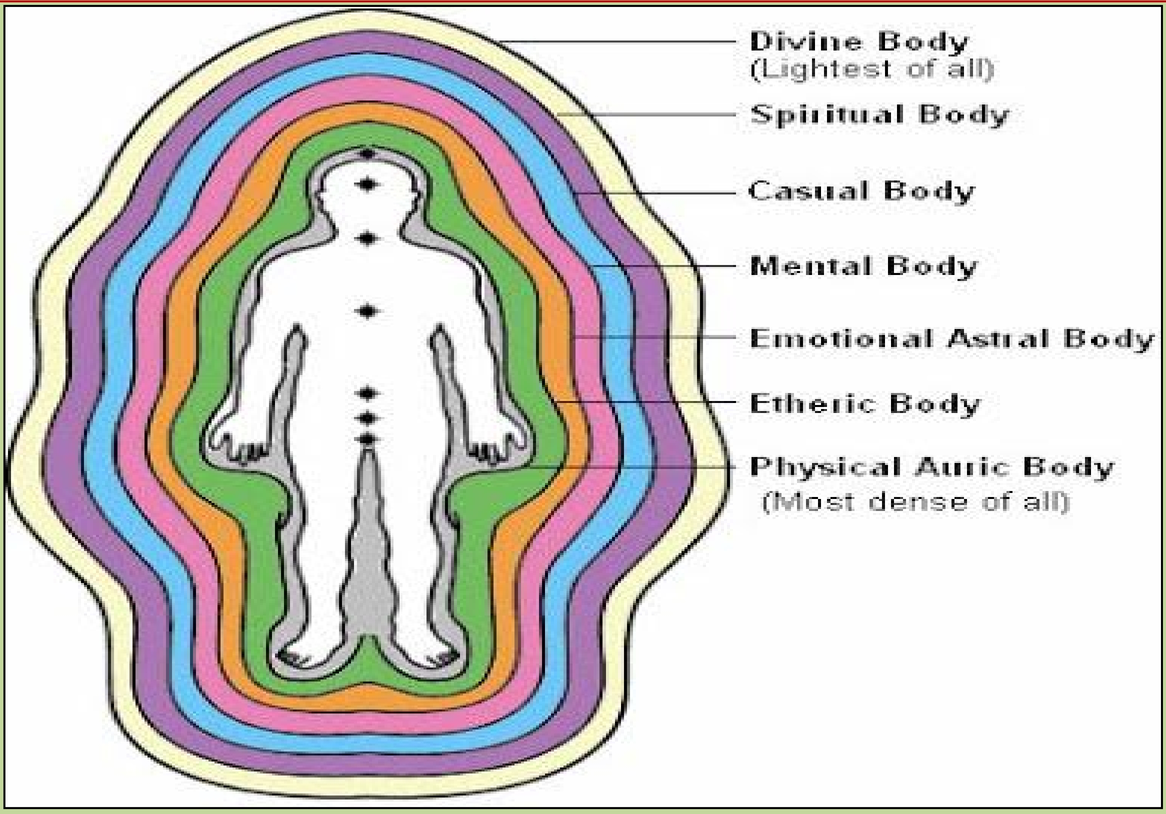
तीसरा - अति सूक्ष्म शरीर (एस्ट्रल बॉडी)

चौथा - मानस शरीर (मेन्टल बॉडी)

पांचवा - आत्मिक शरीर (स्पिरिचुअल बॉडी)

छठा - ब्रह्म शरीर (कॉस्मिक बॉडी)

सातवां - निर्माण शरीर (बॉडीलेस बॉडी)



यह शरीर - रचना एक के बाद एक अथवा एक के अंदर एक है, ऐसी मान्यता है। समझा जाता है कि पहले सात वर्षों में मनुष्य के भौतिक स्थूल शरीर का विकास होता है। उस समय केवल अनुकरण करने की अवस्था रहती है। बुद्धि, भावना, कामनाओं के विकास का अभाव रहता है। ऐसे व्यक्तित्व में और पशुत्व में कुछ अंतर नहीं होता है। पशुओं का भौतिक शरीर विकसित होता है, परंतु दूसरे शरीर अविकसित ही रहते हैं।

अगले सात वर्षों में भाव शरीर का विकास होता है। इस समय मनुष्य का भाव जगत विकसित होता है। उसके बाद सात वर्षों में सूक्ष्म शरीर का विकास होने लगता है। उस समय तक विचार, बुद्धि का विकास होता है। दूसरे शरीर सूक्ष्म शरीर विकास से मनुष्य में एक प्रकार की कुमार प्रौढ़ता आती है। प्रकृति भी इस शरीर के विकास में संपूर्ण सहायक रहती है, परंतु इस विकास के बाद भी मनुष्य पूर्ण नागरिक नहीं बन पाता।

तीसरे शरीर के विकास के बाद विचार, तर्क, बुद्धि के विकसित होने के रास्ते, शिक्षा, संस्कृति और नैतिकता के माध्यम से खुल जाते हैं। शायद इसी कारण २१ वर्ष की आयु में मतदान का अधिकार मनुष्य को दिया जाता है। तीसरे शरीर के विकास के पश्चात् सर्वसामान्य मनुष्य इस शरीर में जीवन भर वहीं अटका रहता है।

चौथे यानी मानस शरीर का विकास सभी के लिए संभव नहीं है। मानस शरीर के अनुभव बहुत आश्चर्य पूर्ण और अद्भुत होते हैं- जैसे सम्मोहन, टेलीपैथी, क्लेयरवॉयन्स, दूसरों के अंतरंग विचार जानना आदि। इस शरीर में सामान्य सत्य (कॉमन रिएलिटी) पीछे रह जाती है। जैसे हाथ में रखी किसी वस्तु को दिखा कर उसके अस्तित्व के संबध में जाना जा सकता है और उस सामान्य सत्य की अनुभूति कराई जा सकती है, परंतु किसी व्यक्ति के अंतर्मन के विचारों की दुनिया में दूसरा व्यक्ति भला कैसे प्रविष्ट हो सकेगा? यहीं से व्यक्ति के वैचारिक जगत् की सीमा का प्रारंभ होता है। अब किसी भी बात की सत्यता-असभ्यताओं के बाह्य नियम समाप्त हो जाते हैं क्योंकि इस स्थिति में मनुष्य के पास ऐसी कोई कसौटी नहीं रह जाती, जिससे वह जान सके कि उसके साथ जो घटित हो रहा है, वह सचमुच घटित हो रहा है अथवा वह एक कल्पना मात्र है।

इसी शरीर के विकास के प्रयास में ही तांत्रिक भटकते पाए जाते हैं। कुछ जादू-टोना जैसी काली विद्याओं के चक्कर में फंसकर बदनाम भी हो जाते हैं। इसी शरीर में अनेक प्रकार की सिद्धियां भी प्राप्त हो सकती हैं। इसी शरीर में अनेक प्रकार के जागृति केन्द्र हैं। शरीर विशेषज्ञ (फिजियोलॉजिस्ट) एक जागृति केन्द्र कुंडलिनी के अस्तित्व को शरीर में खोज नहीं पाते, अत: उसके अस्तित्व को ही नकार देते हैं। कुंडलिनी चौथे मानस शरीर में विकसित होने वाली घटना है। कुंडलिनी के पूर्ण विकास के फलस्वरूप मनुष्य के भविष्य काल का अदृश्य और अलौकिक दर्शन एवं कथन संभव होता है। पांचवे आत्मिक शरीर का विकास चौथे

मानस शरीर के विकास शरीर के विकास का ही एक अगला पड़ाव है। किसी दृश्य वस्तु जैसे मकान, टी.वी. आदि के उल्लेख पर उन शब्दों का तात्पर्य बिलकुल स्पष्ट हो जाता है, परंतु आत्मा के आशय को जो जानते हैं वे पांचवे यानी आत्मिक शरीर धारण करने वाले व्यक्ति कहलाते हैं। जो मोक्ष प्राप्ति के अति निकट पहुंचे हुए माने जाते हैं। परंतु कुछ व्यक्ति बस हमें सब कुछ प्राप्त हो गया ऐसा समझकर आत्मिक विकास को वहीं रोक देने की भूल कर बैठते हैं। छठे शरीर यानी बह्म में मोक्ष प्राप्ति के बाद ब्रह्म को प्राप्त करने की संभावना होती है। यहां न मुक्त है, न अमुक्त है। यहां व्यक्ति जो है उसमें लीन हो जाता है। अहम् ब्रह्मस्मि की उद्घोषणा इस छठे शरीर की संभावना है। इसके बाद विकास का अगला कदम जो अंतिम कूद है जहां न अहम् है, न ब्रह्म है, जहां मैं और तू दोनों ही नहीं हैं, जहां कुछ भी नहीं है - परम शून्य (टोटल एब्सोल्यूट व्हॉइड) वह है निर्वाण यानी सातवां शरीर।

उपयुक्त चौथे शरीर के बाद के शरीरों का स्वरूप काल्पनिक है। कल्पना करना अर्थात् स्वप्न देखना। मनुष्य का मन स्वप्न देखता है कल्पना की उड़ान भरता है। इस कल्पना का चरम रूप विकसित होकर संकल्प (विल) बनता है और स्वप्न देखने की क्षमता का पूर्ण विकसित रूप है- अतींद्रिय दर्शन (विजन या साइकिक विजन) कोई व्यक्ति यद्यपि स्वप्न को अतीर्द्रिय दर्शन में रूपांतरित कर सके, तो आंखे बंद कर किसी भी वस्तु मात्र को देख सकता है। वह स्वप्न नहीं देखता, मात्र सत्य सृष्टि का दर्शन पाता है। ऐसा व्यक्ति दीवार के पार भी देख सकता है, दूसरों का विचार जान सकता है। विजन का अर्थ है टाइम (काल) और स्पेस (स्थान) के मध्य की दूरी समाप्त कर अंतर्ज्ञान से सब देखना और सुनना।

अतींद्रिय चक्षु द्वारा नाड़ी ग्रंथों का निर्माण

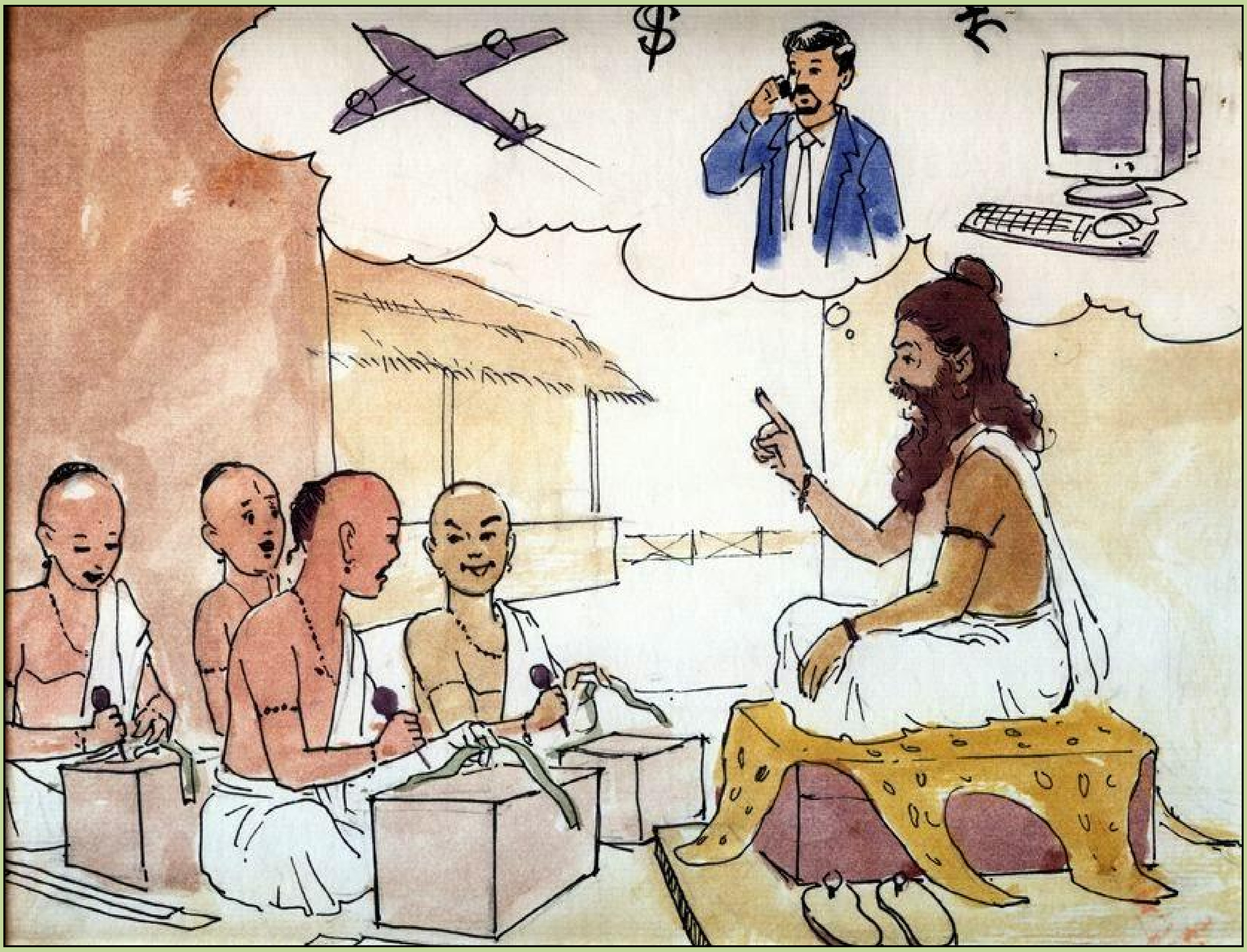
अतींद्रिय चक्षु द्वारा नाड़ी ग्रंथों का निर्माण



भृगु तथा शुक्र महर्षियों के संवाद में ग्रंथित संहिता का पठण उनके आश्रम में हो रहा है. मानो प्रात:काल सभी शिष्य गण उनकी चर्चा में भाग ले रहें हैं.

मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि अतींद्रिय दर्शन की क्षमता से ही नाड़ी ग्रंथ रचना को, हजारों वर्षों के बाद जन्म लेने वाले लाखों लोगों के अचूक और सटीक ललाट लेख पढ़ने की प्रेरणा मिली होगी। नाड़ी ग्रंथकारों ने अतींद्रिय दर्शन से आगे आने वाली मानव जाति के लिए संभाव्य चिंता, कष्ट, दु:खों का निवारण करने हेतु भविष्य कथन का प्रचंड कार्य हाथ में लिया होगा, जिसमें मानव जाति को सुख-

शांति और प्रेम की प्राप्ति संभव हो सके, अत: किसी भी प्रकार का धन, मान-सम्मान एवं पद का प्रलोभन न होते हुए मानव जाति के लिए की गई इस निष्काम सेवा का मूल्य मापन किसी भी तरह संभव नहीं।



(जैसे आज हमें लगता है कि इतने प्राचीन काल में कम्प्यूटर, विमान, आदि आधुनिक सामान की खोज नहीं हुई थी तब द्रष्टा महर्षीयों को कैसे पता चला होगा? वैसे ही सामने बैठे विद्यार्थीयों को हम से जादा अचरज होता होगा की आने वाले समय में मानव की क्या प्रगती होगी।)

यह सब कैसे संभव हुआ होगा? कितने ऋषि-मुनियों को इस गंभीर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी? कितने ऋषि-मुनियों को इस गंभीर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी? कितने और कैसे लोग यह भविष्य लिखने हेतु सिद्ध होंगे? यह लेखन कार्य कितने काल में सम्पन्न हुआ होगा? लेखन की साधन-सामग्री कौन-सी रही होगी? लिखा गया

साहित्य किस तरह सुरक्षित रखा गया होगा? जिनके लिए यह भविष्य लिखा गया है, उन्हें उसे जानने हेतु प्रेरित करने की क्या योजना रही होगी? भविष्य वाचन हेतु, आने वाले व्यक्ति से संबधित पृष्ठ ढूंढ पाना कैसे संभव हो, इसके लिए किस प्रकार की अनुक्रमणिका (इन्डेक्सिंग) को आयोजन किया होगा? ऐसे बहुत से प्रश्न मन में उठते हैं। नाड़ी ग्रंथ लेखन के संबध में नाड़ीशास्त्रियों के साथ चर्चा करके और पुस्तकें पढ़कर कुछ तर्क सामने आए। उस आधार पर मेरी धारणा बनी कि श्री अगस्त्य या उनके जैसे सभी नाड़ी ग्रंथकारों के अनेक गुरू कुल अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग काल में कार्यरत रहे होंगे। शिष्यों को आत्मज्ञान, वेद-उपवेद आदि कठिन और उबाने वाली शिक्षा से प्राप्त थकान दूर करने के लिए आयुर्वेद, ज्योतिर्वेद, संगीत, नृत्य, चित्रकला आदि विविध ज्ञान और मनोरंजन के विषय पढ़ाए जाते होंगे। कुछ शिष्यों ने उन विषयों में निपुणता प्राप्त की होगी। राजदरबार में अनेक मंचो पर इन निपुण शिष्यों द्वारा वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, चर्चा-सत्र का आयोजन किया जाता होगा। इन्हीं विद्वान शिष्यों द्वारा ज्ञान की गंगा मानव जाति के कल्याण हेतु उपयोग में लाने के लिए गुरूकुलों के प्रमुखों द्वारा ये नाड़ी ग्रंथ लिखे गए होंगे। ऐसा भी हो सकता है कि गुरुकुल में गुरू अपने २००-३०० शिष्यों से ध्यान करवा कर उन्हें एक सामूहिक मानसिक अवस्था (कलेक्टिव माइंड) में ले जाते होंगे, बाद में योग विद्या से सभी विशारद शिष्य अलग से व्यक्तियों के भूत-भविष्य देखने में अपने गुरू के समान सक्षम हो गए होंगे। कुछ प्रशिक्षणार्थी २-२ या ३-३ की संख्या में उस ध्यानस्थ विशारद के साथ बैठकर जो कि भूत-भविष्य की वाणियां उनके द्वारा सुनाई जा रही होंगी, उसे ध्यान पूर्वक सुनकर शीघ्रता से लिख लेते होंगे। ध्यान समाधि की अवधि कम होने के कारण ५-१० व्यक्तियों के भविष्य कथन के बाद उन विशारदों का उस दिन का कार्य सम्पन्न होता होगा।

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा एकत्रित कच्ची लिखाई में सुनते - लिखते समय रह जाने वाली

त्रुटियों को आपस में चर्चा करके सुधार कर पूर्णत: संशोधित रूप में बदल देने का कार्य चलता होगा।



कुछ नए प्रशिक्षिणार्थी पास के जंगलों से या गुरुकुल में लगाए १. ताड़ वृक्ष पर चढना। २. बडे पत्ते पेड़ से काटकर नीचे लाना, ३. फिर के पत्तों को समान आकार में काटना, अलग अलग आकार में लिखने योग्य बनाकर नाडी आश्रम में बेचना। ४. आश्रम में रासायनिक प्रक्रिया द्वारा द्वारा उन पत्तों को कागज जैसा, लिखने के लिए तैयार करते होंगे, जैसे हम टाइपिंग या छपाई हेतु कागज को तैयार करते हैं।

जंगल से ताड़ पत्तों को पेड़ से काटकर आश्रम तक लाने की प्रक्रिया



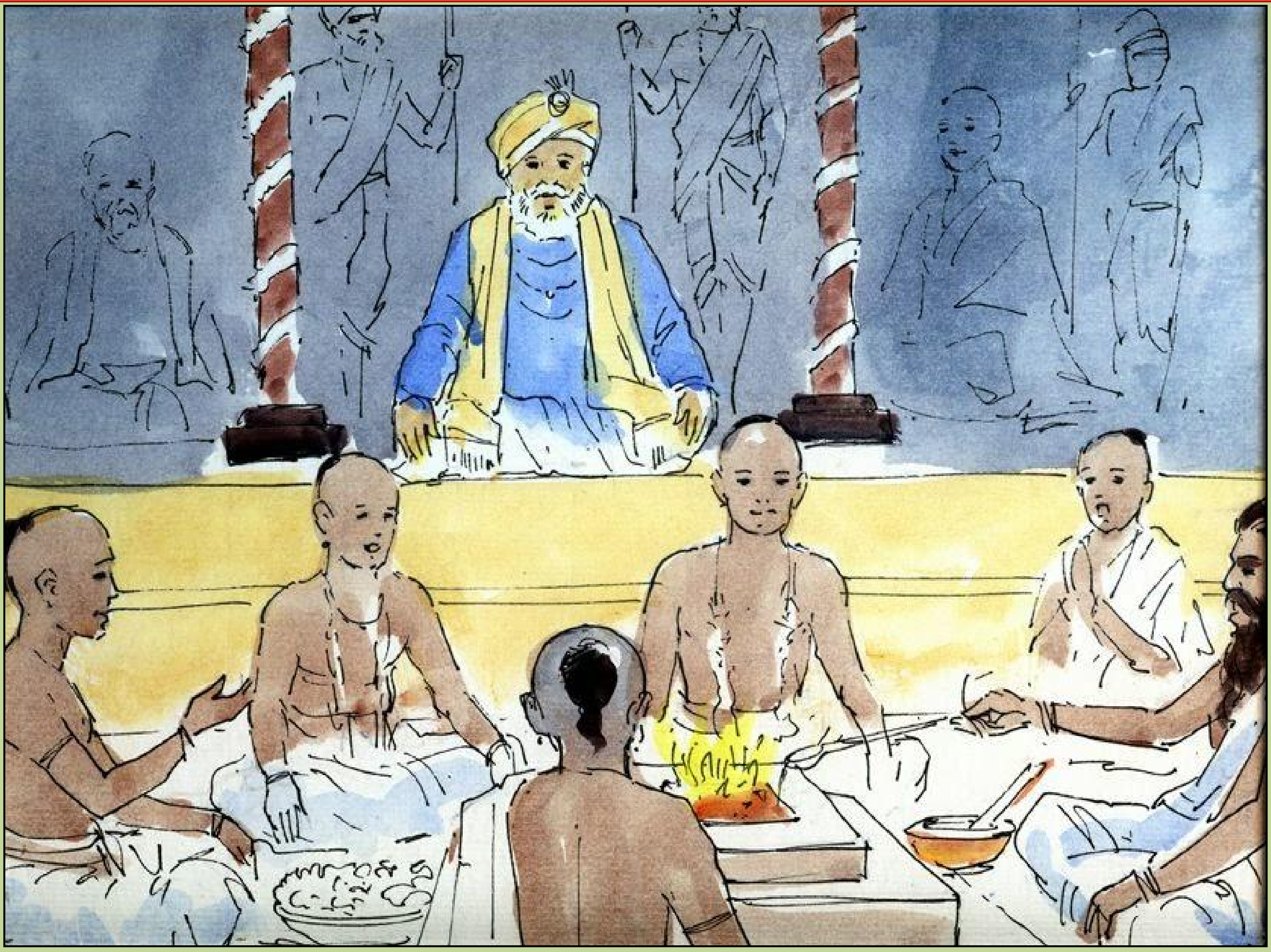



क्र १ क्र २ क्र ३ क्र४

कुछ विशिष्ट प्रशिक्षणार्थी, तमिल कूटलिपि लिखने में कुशलता प्राप्त कर एक कीलनुमा कलम से ताड़पत्रों पर पक्की लिखाई में, तैयार भविष्य को लिपिबद्ध करते

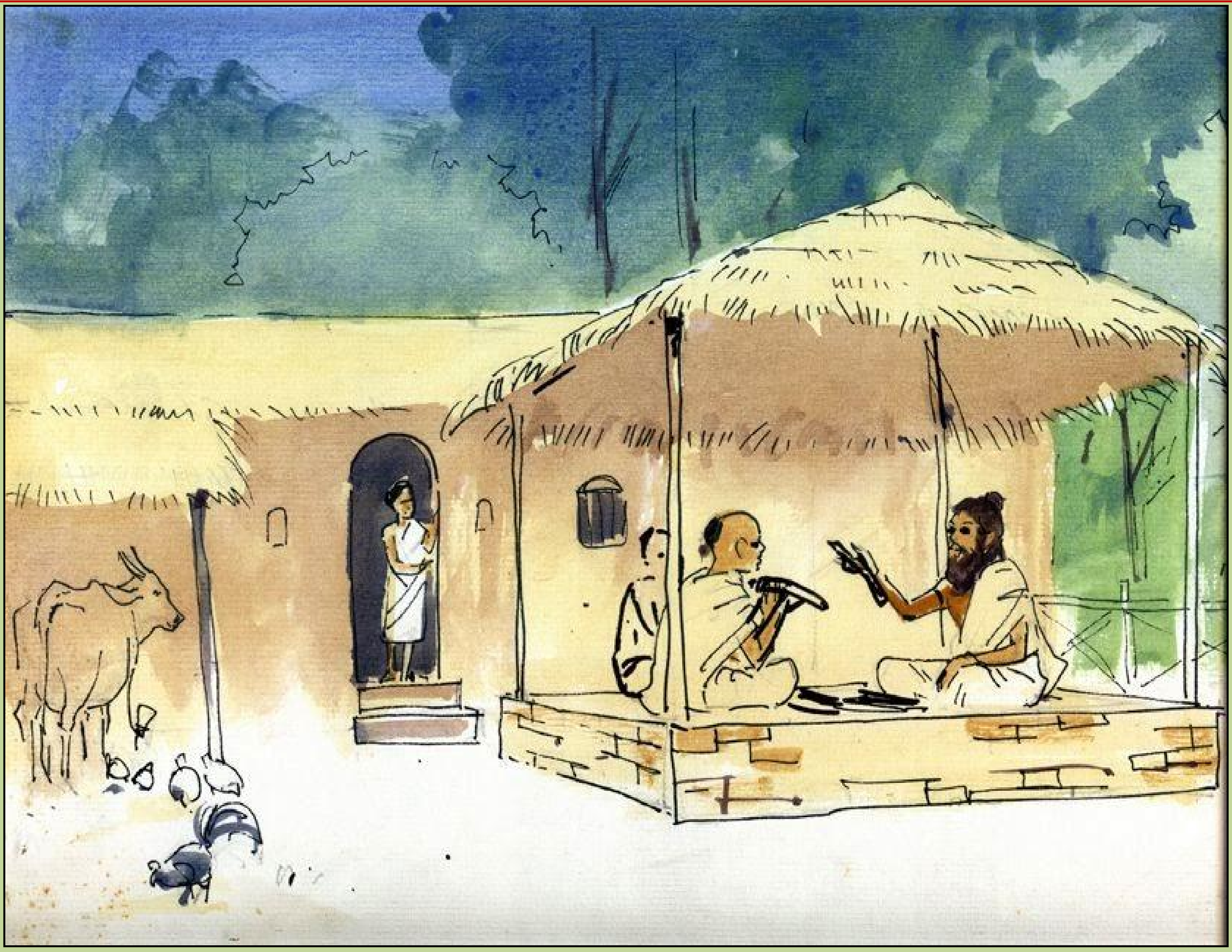


होंगे। इस तरह तैयार बनी ताड़पत्रियों को कुछ और प्रशिक्षणार्थी, अंगूठो के १०८ प्रकार के निशानों के अनुरूप वर्गीकरण कर, ५०-६० ताड़पत्रियों की गड्डियां बनाकर, हर गड्डी को लकड़ी की दो पट्टियों के बीच रस्सी में पिरोकर रखने का कार्य करते होंगे। यह वर्णन लिखते समय प्रस्तुत लेखक को अपनी उंगलियों द्वारा कोई दूसरा व्यक्ति लिख रहा है, ऐसी अनुभूति हो रही थी।



गुरुकुल में इस तरह से तैयार भविष्य कथन की सामग्री सुरक्षित रखने हेतु गुरूओं ने पहले से ही राजा-महाराजाओं से संपर्क स्थापित किया होगा। ये राजा-महाराजा उक्त गुरूओं के शिष्यों में से ही रहे होंगे। उनके द्वारा इन ताड़पत्रों पर लिखे नाड़ी ग्रंथ राज्य के बड़े-बड़े देवालयों में सुरक्षित रखे गए होंगे। अनेक गुरूकुलों में इस प्रकार से नाड़ी ग्रंथ लेखन कार्य सैकड़ों वर्ष चलता रहा होगा और इस कारण थोड़ा-थोड़ा करके आज लाखों की संख्या में ताड़पत्र उपलब्ध हो गए हैं।

एक लंबे कालखंड में गुरुकुल प्रणाली का प्रचलन बंद होना, मतभिन्नता, प्राकृतिक विपत्तियां, मंदिरों में पुजारियों के आपसी मनमुटाव, राजा-महाराजाओं की आपस की लड़ाइयां आदि रूकावटों एवं संकटो के होते हुए यहां नाड़ी ग्रंथ संपदा आज भी उपलब्ध है, यह भी क्या कम है।



कभी-कभी ताडपत्रों की अनुपलब्धता (समय पर न मिलना) भविष्य कथन की कच्ची लिखाई को समय के अभाव के कारण लिपिबद्ध करते समय आई रूकावटों या कभी जल्दबाजी में गलत जानकारी लिखा जाना या छूट जाना आदि त्रुटियां होना संभव होगा क्योंकि यह ही इतना प्रचंड, जटिल और झंझटपूर्ण है कि जिसमें जाने-अनजाने में मामूली गलतियों का होना स्वाभाविक था। इस प्रकार सुरक्षित भविष्य कथन का साहित्य संबधित व्यक्ति के पास, उसके जीवन काल में उस तक पहुंचाने का कार्य तथा संबधित व्यक्ति का इस भविष्य को जानने के लिए प्रेरित करने हेतु कोई योजना अवश्य बनाई गई होगी। गुरुकुल के कुछ विशारद गृहस्थाश्रमी बनकर इन ताड़पत्रों को लेकर अलग-अलग स्थानों पर बस गए होंगे। कालांतर में मतभिन्नता, सत्ता संघर्ष कारणों से निर्मित होने वाले कृत्रिम भौगोलिक बंधन बढ़ने से इस प्रचंड ग्रंथ संपदा का छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया

होगा। इसके अतिरिक्त मध्ययुगीन परिधर्मियों के अत्याचारों, आक्रमणों के कारण बहुत से ताड़पत्र नष्ट भी हुए होंगे। इन सभी विषमताओं के होते ये नाड़ी ग्रंथ आज भी भविष्य बनाने से संपूर्णतः सक्षम है। उस परिप्रेक्ष्य में नाड़ी शास्त्र को हठीली नज़रों से देखकर नज़रअंदाज़ करना कहां तक उचित है?

समाप्त